Ajanta
Page No.
Date

है और वे अधिक मात्रा में श्रमिकों को कार्य पर लगाना चाहते हैं। इससे ~~अनादेय भी~~ न केवल उद्योग में ही नहीं पूरे देश में मजदूरी में कटौती की जाती है जिससे उत्पादन की लागत कम हो जाती है, फलत: वस्तुओं की कीमतें कम हो जाती हैं तो वस्तुओं के लिए माँग बढ़ेगी और बिक्री में वृद्धि होगी। बिक्री से अधिक श्रम को रोजगार पर लगाना आवश्यक हो जाएगा। अन्तत: पूर्ण रोजगार प्राप्त हो जाएगा।

श्रम की पूर्ति (Suply of Labour)

श्रम की पूर्ति (Suply of Labour)

श्रम की पूर्ति श्रमिकों द्वारा की जाती है, अर्थात श्रमिक श्रम विक्रेता है। श्रम की पूर्ति से आशय है— (i) एक विशेष एक विशेष प्रकार के श्रमिकों की संख्या जो मजदूरी की विभिन्न दरों पर काम करने के लिए तैयार रहता है और (ii) कार्य करने के घंटे जो कि प्रत्येक श्रमिक मजदूरी की भिन्न-भिन्न दरों पर देने को तत्पर हो। अतः श्रम की पूर्ति से आशय एक विशेष प्रकार के श्रम के उन घंटों या दिनों से है जिन्हें विभिन्न मजदूरी दरों पर नियोजनार्थ प्रस्तुत किया जाता है।

श्रम की पूर्ति के संघटक (Components of Suply of Labour)

श्रम की पूर्ति का निर्माण निम्नलिखित तथ्यों से होता है। (i) श्रमिकों की संख्या (ii) कार्य के घंटे (iii) कार्य की गति (iv) श्रम की कार्यकुशलता।

(1) श्रमिकों की संख्या (Number of workers) श्रमशक्ति श्रमिकों की संख्या पर आधारित होती है। श्रमिकों की संख्या स्वयं देश की जनसंख्या पर निर्भर करती है। जनसंख्या का कौन सा भाग श्रमिकों को सम्मिलित किया जाता है इसके संबंध में प्रो. स्नाडग्रास लिखते हैं कि "किसी व्यक्ति को श्रम शक्ति में उसी समय सम्मिलित करना चाहिए जबकि वह कार्य करने में समर्थ हो और या तो उसके पास कार्य हो अथवा वह कार्य की सक्रिय तलाश में हो।"